प्रेम का अद्भुत प्याला

नई दिल्ली के अंग्रेज़ी अखबार दि हिंदुस्तान टाइम्स के इन्नर वॉयस स्तंभ में ओशो के एक शिष्य, 70 वर्षीय वरिष्ठ वकील, श्री आर. एन. प्रभाकर ने लिखा है कि मैंने परमात्मा को एक ऊर्जा के रूप में अनुभव किया है। एक विद्युत की धारा की भांति, जो सभी यंत्रों को चालित करती है। हम मनुष्य भी यंत्रों की भांति हैं जो आती-जाती श्वास के माध्यम से ऊर्जा प्राप्त करते हैं। वायु जो हम भीतर लेते हैं उसमें एक अदृश्य प्राण-ऊर्जा भी होती है जो हमारी देह में विद्युत की भांति कार्य करती है; इसमें विधायक तथा ऋणात्मक ऊर्जा की धाराएं होती हैं... इस प्रकार यह लेख आगे चलकर प्रार्थना इत्यादि की आवश्यकता को हटा कर मनुष्य को अपने दुख-सुख के लिए स्वयं उत्तरदायी होने के लिए उकसाता है।

फाइनेंसियल एक्सप्रेस के 3 जून के संस्करण में स्वामी चैतन्य कीर्ति द्वारा रचित एक लेख को गणित जैसा शीर्षक दिया गया है–दि मैथेमैटिक्स ऑफ अपरयूनिटी कास्ट। इसमें तथाता तथा अद्वैत के जीवन-दर्शन की प्रस्तुति की गयी है तथा चुनाव-रहित चैतन्य की ओशो की अंतर्दृष्टि को पिरोया गया है। ओशो कहते हैं : तुम चुनो और तुम विपदा को चुन लोगे। तुमने चुना कि तुम जाल में फंसे, क्योंकि जब भी तुम चुनते हो तो तुम विभाजन कर देते हो कि यह अच्छा है, यह बुरा है। जीवन एक है। अस्तित्व अखंड रहता है, अस्तित्व में एक आंतरिक अखंडता है। यह नैसर्गिक अद्वैत है, जहां वास्तविक स्वास्थ्य है जो समग्रता से उपजता है।

इसी आशय के एक और लेख को सीधा-सरल और सार्थक-शीर्षक जीवन का गहन स्वीकार–(ए डीप अक्स्पटेंस ऑफ लाइफ) मिला है अमेरिका से प्रकाशित एक बड़ी पत्रिका 'तथास्तु' में। इस लेख के साथ पूरे पृष्ठ का ओशो का रंगीन चित्र है। स्वामी चैतन्य कीर्ति द्वारा रचित इस लेख में ओशो की अंतर्दृष्टि है : 'जीवन जो भी लाए उसको स्वीकार करो। यही तथाता है। अनुग्रहपूर्वक स्वीकार करो। ठंडी हवा का एक झोंका आया, क्या आप सोचते हैं कि आपने इसे अर्जित किया था।... एक सुंदर बादल आकाश में तिर गया, एक मनोरम सूर्यास्त हुआ और क्षितिज पर सब रंग फैल गए, एक इन्द्रधनुष के सभी सातों रंग... जो भी जीवन ले आए, सब कुछ अहोभाव पूर्वक, आनंद से, धन्यता से भर कर स्वीकार कर लो। धीरे-धीरे तुम्हारे भीतर हर बात के प्रति गहन स्वीकार-भाव निर्मित होगा। और इसी गहन स्वीकार-भाव में अतिक्रमण छिपा है!'

2 जून के दिव्य हिमाचल में ओशो का एक प्रवचनांश छपा है आत्मज्ञान और समाधि, जिसमें ओशो जागने औषधि बताते हैं : 'ध्यान, जागरण, विवेक। लेकिन जब जाग गए तो यह भी पता चलता है कि हम तो जागने के भी पार हैं। यह सोना और जागना, यह भी शरीर और मन में ही हो रहा है।'

इसी दिन हैदराबाद के स्वतंत्र वार्ता ने ओशो के ताओ-उपनिषद का एक प्रवचनांश प्रकाशित किया है: कल आज कल हो जाएगा। ये

(Left) *The kathak performance by Divya Goswami was especially choreographed for the occasion.*

(Below) *The Audience meditating during the course of the exhibition.*

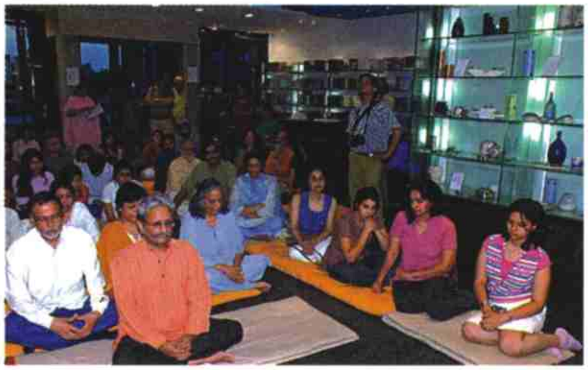

CELEBRATING Buddha

Osho World Galleria organized an exhibition titled 'Tathata: the total acceptance' to mark Buddha's message to humanity. The exhibition was inaugurated on May 3, with a Kathak

प्रवचनांश निरंतर नियमित प्रकाशित हो रहे हैं। ऐसे ही हैदराबाद के हिंदी मिलाप में भी। अहोभाव। एशियन एज, टाइम्स ऑफ इंडिया के राष्ट्रीय तथा नई दिल्ली और कलकत्ता संस्करणों में जागरण, आफ्टरनून में भी हर सप्ताह ओशो के प्रवचन-उद्धरण देख कर प्रसन्नता होती है। जालंधर के अजीत समाचार में 'स्वस्थ राजनीति के प्रतीक पुरुष—कृष्ण' नियमित रूप से प्रकाशित हो रहा है।

5 जून की राजस्थान पत्रिका ने ओशो का प्रवचनांश 'प्रेम का अद्भुत प्याला' प्रकाशित किया है। ओशो कहते हैं : आत्मसम्मान करो। आत्मगौरव करो। परमात्मा की इस अनोखी भेंट के लिए जो तुम्हें मिला है, धन्यवाद दो। नाचो। इसी नाच में प्रार्थना पैदा होती है।

6 जून की 'मैट्रो नाऊ' नई दिल्ली की दैनिक में 'प्रत्येक घर मंदिर बन जाए' प्रवचनांश में ओशो ने कॉरपोरेट घरों को यह सुझाव दिया है। इस अखबार में हर बुधवार को ऐसे ही प्रवचनांश छपते हैं।

9 जून के एशियन एज में ओशो वर्ल्ड गैलेरिया के संबध में एक बड़ा और सुंदर लेख है—मोनिका अग्निहोत्री, विनीत ककड़, दीप्ति गुप्ता तथा प्रिंस चांद की अद्भुत कलाकृतियों की भव्य प्रदर्शनी की विस्तृत चर्चा है।

12 जून की डेली राजस्थान पत्रिका ने ओशो की पुस्तक 'दि वे ऑफ झेन' की चर्चा की है, इसमें निष्कर्ष में ओशो कहते हैं : 'झेन का कोई लक्ष्य नहीं है, वह एक यात्रा है जिसका कोई गंतव्य नहीं। यात्रा करना जीवंतता का प्रतीक है लेकिन कहीं पहुंचना मृत्यु है।'

13 जून की डेली न्यूज़ एंड एनालिसिस में अमृत साधना का लेख 'फिक्स दि ब्रोकन विंडो' उल्लेखनीय है। यह लेख अपराधों का मनोविज्ञान समझाते हुए ओशो की अंतर्दृष्टि प्रस्तुत करता है।

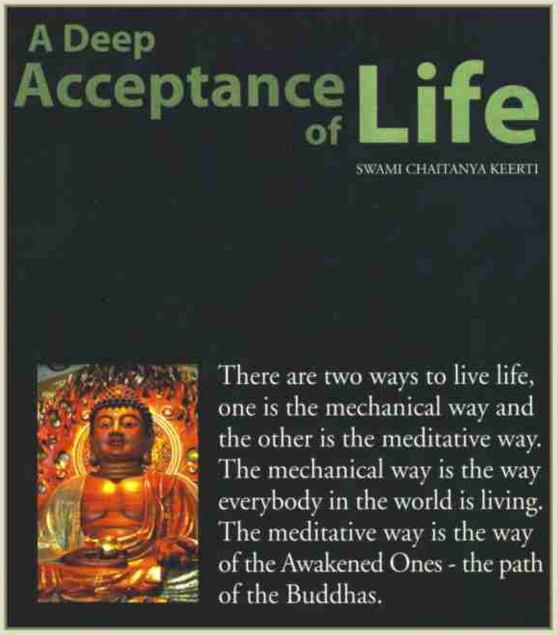
A Deep Acceptance of Life

SWAMI CHAITANYA KEERTI

There are two ways to live life, one is the mechanical way and the other is the meditative way. The mechanical way is the way everybody in the world is living. The meditative way is the way of the Awakened Ones - the path of the Buddhas.

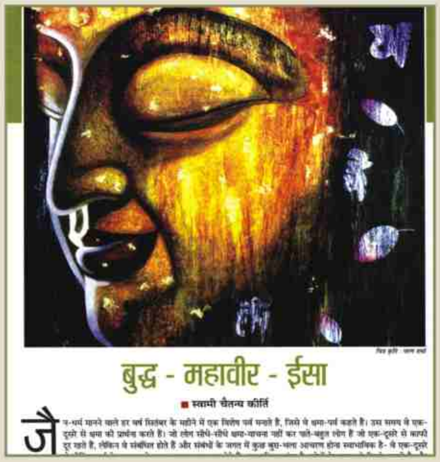
बुद्ध - महावीर - ईसा

स्वामी चैतन्य कीर्ति

Religious symbols take artists on spiritual road

FOZIA YASIN

Religion is shaping the contours of art and an increasing number of sculptors are drawing on religious symbols in their body of work. And the common symbols they use include *kalash*, *trishul*, *kamandal* and Buddhist begging bowls.

Artists' association with religious symbols is not new and for them the belief seems to rest on these sacred charms. Sculptor Monica Agnihotri combines begging bowls with different symbols in Buddhism. The begging bowl is one of the simplest, but the most impor-

14 जून की हरिभूमि में प्रवचनांश का शीर्षक है : 'चिंता मत करो, सोचो'।

राष्ट्रीय सहारा के 20 जून के अंक में श्री अजय विद्युत का ओशो के जीवन-दर्शन पर एक लेख है : मरने के बाद। इस लेख में सेठ गोविंददास के घर में जुगल किशोर बिड़ला तथा ओशो की मुलाकात का एक सुंदर संस्मरण है।

26 जून के महामेधा (नई दिल्ली) में चिंतन स्तंभ के अंतर्गत ओशो का एक प्रवचनांश है : जागरण और आत्मक्रांति। 26 जून के दैनिक जागरण में 'हम घरि आए राजा राम भरतार' संत कबीर दास पर ओशो का एक प्रवचन प्रकाशित हुआ है। जागरण अखबार की लोकप्रिय मासिक पत्रिका के जुलाई अंक में ओशो का एक प्रवचनांश दो पृष्ठों में छपा हैं : दुनिया है दर्पण। ओशो कहते है : उसी व्यक्ति को गुरु जानना जो तुम्हारे बावजूद तुम्हें ठीक लगने लगे। गुरु का इतना ही अर्थ होता है कि तुम इनकार ही करना चाहते थे, लेकिन कर न पाए।

29 जून के टाइम्स ऑफ इंडिया के 'व्हाटस हाट' में स्वामी चैतन्य कीर्ति का लेख है : 'मेक ए डिसीज़न टू बी हैप्पी।' प्रसन्न होने का निर्णय करो। गधे, गाय, भैंस, ऊंट, कुत्ते आदि पशु हांके—चलाए जाते हैं, क्योंकि वे अपना निर्णय खुद नहीं ले पाते, लेकिन मनुष्य की अपनी चेतना है। यह चेतना प्रसन्न रहने का निर्णय करने में समर्थ है। इस लेख में ओशो के प्रवचन उद्धरण के साथ मुल्ला नसरुद्दीन के जीवन से जुड़ी एक रोचक घटना भी है।

'अहा जिंदगी' हिंदी की जीवन विधायक एक सुंदर मासिक पत्रिका में

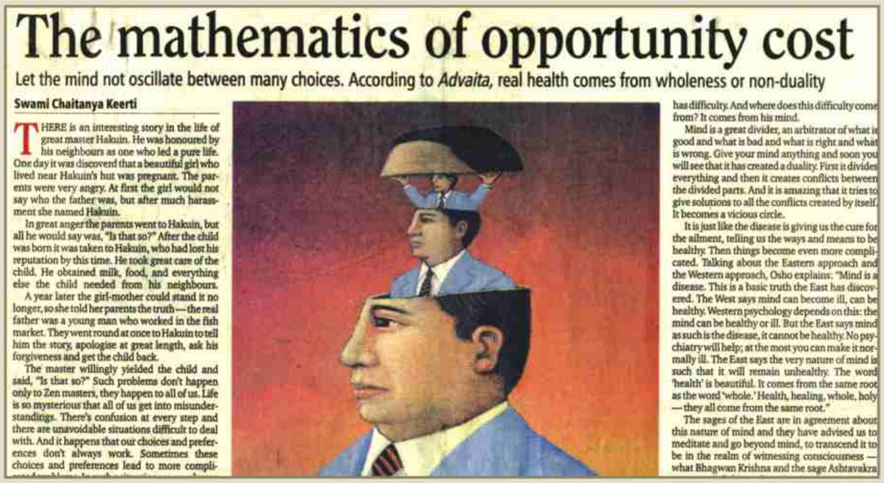

The mathematics of opportunity cost

Let the mind not oscillate between many choices. According to *Advaita*, real health comes from wholeness or non-duality

Swami Chaitanya Keerti

THERE is an interesting story in the life of great master Hakuin. He was honoured by his neighbours as one who led a pure life. One day it was discoverd that a beautiful girl who lived near Hakuin's hut was pregnant. The parents were very angry. At first the girl would not say who the father was, but after much harassment she named Hakuin.

In great anger the parents went to Hakuin, but all he would say was, "Is that so?" After the child was born it was taken to Hakuin, who had lost his reputation by this time. He took great care of the child. He obtained milk, food, and everything else the child needed from his neighbours.

A year later the girl-mother could stand it no longer, so she told her parents the truth — the real father was a young man who worked in the fish market. They went round at once to Hakuin to tell him the story, apologise at great length, ask his forgiveness and get the child back.

The master willingly yielded the child and said, "Is that so?" Such problems don't happen only to Zen masters, they happen to all of us. Life is so mysterious that all of us get into misunderstandings. There's confusion at every step and there are unavoidable situations difficult to deal with. And it happens that our choices and preferences don't always work. Sometimes these choices and preferences lead to more compli-

has difficulty. And where does this difficulty come from? It comes from his mind.

Mind is a great divider, an arbitrator of what is good and what is bad and what is right and what is wrong. Give your mind anything and soon you will see that it has created a duality. First it divides everything and then it creates conflicts between the divided parts. And it is amazing that it tries to give solutions to all the conflicts created by itself. It becomes a vicious circle.

It is just like the disease is giving us the cure for the ailment, telling us the ways and means to be healthy. Then things become even more complicated. Talking about the Eastern approach and the Western approach, Osho explains: "Mind is a disease. This is a basic truth the East has discovered. The West says mind can become ill, can be healthy. Western psychology depends on this: the mind can be healthy or ill. But the East says mind as such is the disease, it cannot be healthy. No psychiatry will help; at the most you can make it normally ill. The East says the very nature of mind is such that it will remain unhealthy. The word 'health' is beautiful. It comes from the same root as the word 'whole.' Health, healing, whole, holy — they all come from the same root."

The sages of the East are in agreement about this nature of mind and they have advised us to meditate and go beyond mind, to transcend it to be in the realm of witnessing consciousness — what Bhagwan Krishna and the sage Ashtavakra

अमृत साधना तथा चैतन्य कीर्ति के लेख नियमित रूप से प्रकाशित हो रहे हैं। इन लेखों में अलग-अलग थीम पर ओशो की अंतदृष्टि सगुंफित होती है।

2 जुलाई के अंग्रेजी इंडिया टुडे तथा 4 जुलाई को इसके हिंदी संस्करण में ओशो का सचित्र उल्लेख है। इतने समय से सुस्थापित पत्रिका की भाषा तथा तथ्यों की जानकारी पर हंसी आती है। शीर्षक है पुणे से ओरगन। ओरगन नहीं, ओरेगन होना चाहिए। आगे लिखा है—'लगभग 15 वर्षों तक के रोज़ाना प्रवचन देने वाले दार्शनिक रजनीश ने, जो खुद को भगवान कहते थे और जिन्हें ओशो के नाम से भी जाना जाता है, साढ़े तीन वर्ष के लिए मौन व्रत धारण कर लिया। 1 मई को वे अमेरिका के लिए रवाना हुए और अपने शिष्यों के साथ वहां के ओरेगन नामक स्थान में एक फार्म पर जा कर बस गए।' उनकी तथा सबकी जानकारी के लिए यह बताना आवश्यक है कि ओरेगन में यह एक केवल फार्म नहीं था। चौसठ हजार एकड़ में फैली रैंच थी, जिसमें रजनीशपुरम नामक शहर बसा, जहां पांच-सात हज़ार लोग रहने लगे थे और महोत्सवों के दिनों में उनकी संख्या बीस हज़ार तक हो जाती थी। वहां ओशो ने अपने मौन के बाद बड़ी मात्रा में प्रवचन दिये, विश्व भर की मीडिया के साथ साक्षात्कार हुए और पूरे विश्व में उनकी चर्चा हुई। अमेरिका की रीगन सरकार इस घटना को पचा नहीं पायी, उसने ओशो तथा उनके कम्यून को उखाड़ने के लिए सभी कुटिलताएं अपनायीं। आपको यह सब जानकारी एक पत्रकार, मैक्स ब्रेखर की पुस्तक 'ए पैसेज टू अमेरिका' में मिल सकती है।

वृक्ष के समान नृत्य

अपने हाथों को ऊपर उठा लें और इस तरह झूमें जैसे तेज हवा में कोई वृक्ष झूमता हो। जैसे वर्षा में और हवाओं में कोई वृक्ष नृत्य करता हो, इस भांति नृत्य करें। अपनी संपूर्ण ऊर्जा को नृत्य में बहने दें। झूमें और हवा के साथ नाचें, हवा को अपने में से गुजरता हुआ महसूस करें। भूल जाएं कि आपके पास मानव-शरीर है—आप एक वृक्ष हैं, वृक्ष ही हो जाएं। यदि संभव हो तो खुले में चले जाएं, वृक्षों के बीच में खड़े हो जाएं, वृक्ष हो जाएं और हवाओं को अपने में से गुजरने दें।

वृक्ष जैसा अनुभव करना बहुत ही शक्तिदायक और प्राणवर्द्धक अनुभव है। इससे व्यक्ति बहुत ही आसानी से नैसर्गिक चेतना में चला जाता है। वृक्ष अभी भी वहीं हैं। वृक्षों से बातें करें, वृक्षों को गले लगाएं और अचानक आप महसूस करेंगे कि सब कुछ वापस आ गया है। यदि बाहर बगीचे में या खुले में जाना संभव न हो तो अपने कमरे के बीच में खड़े हो जाएं और भाव करें कि आप एक वृक्ष हैं और वृक्ष की भांति नृत्य शुरू कर दें।

—ओशो

A. K. AUTOMATICS

(Manufacturers of Precision Machine, Turned Components and Fasteners)

HISSAR ROAD, ROHTAK-124001 (HARYANA) INDIA

Tel: 01262-248516, 248885, 248999, 265892-5 Fax: 01262-248223

Email: akmicro@ndf.vsnl.net.in